'आशाराम' से बड़ा 'बलात्कारी' निकला 'सच्चिदानंद'

स्वामी सच्चिदानंद का सत्यलोक आश्रम बना साध्वियों के लिए नर्क लोक आश्रम

▸▸ इस सत्यलोक आश्रम में साध्वी बनती थी, बाबा के हवस का शिकार ▸▸ गरीब महिलाओं का कल्याण करने के बहाने उनके साथ करता था बलात्कार ▸▸ बाबा की मुख्य सेविका कमला बाई और परमिला बाई भोली भाली महिलाओं को उनकी गरीबी दूर करने का झांसा देकर आश्रम में लाती ▸▸ बाबा के शिष्य परमचेतानंद, विश्वासा नंद और ज्ञान बैरागानंद मिलकर करते थे बलात्कार ▸▸ कभी यह चारों साध्वियों को नवादा, तो कभी मुंबई, तो बृजघाट आश्रम अमरोहा, दिल्ली ले जाकर हवस मिटाते थे ▸▸ दोनों पीड़ित साध्वियों के लिए सेल्हरा के प्रधान कल्पनाथ चौधरी दरिंदों के हाथों से छुड़ाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा

तेजयुग न्यूज

बस्ती।...'आशाराम' जैसे अनेक दरिंदा देश के विभिन्न आश्रमों में बाबा बनकर गरीब महिलाओं को कभी उनकी गरीबी दूर करने के बहाने तो कभी दीक्षा और कल्याण करने के नाम पर उन्हें हवस का शिकार बना रहे है। इनके इस घिनौने कार्य में बाबाओं की मुख्य सेविकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं।

देखा जाए तो आशाराम से बड़े कई दरिंदें बाबा का चोला पहन और धर्म के नाम पर आश्रम में आने वाली महिलाओं को अपना शिकार बना रहे है। आशाराम से अधिक खूंखार और अपने आपको धर्म का ठेकेदार कहने वाले कथित बाबा 'सच्चिदानंद उर्फ दयानंद' बस्ती में भी है। इनके साथ कथित बाबा के कथित परम षिष्य परमचेतानंद, विष्वासा नंद और ज्ञान बैरागानंद ने मिलकर दो साध्वियों का बलात्कार करते रहे। इनके इस कार्य में बाबा की मुख्य सेविकाएं 'कमला बाई' और 'परमिला बाई' सहयोगी रहीं। यही दोनों सेविकाएं गरीब महिलाओं और नाबालिग लड़कियों को बहला फुसला और लालच देकर मूड़घाट स्थित संत कुटीर आश्रम जिसे 'सत्यलोक आश्रम' भी कहते हैं, लाती थी। इस आश्रम में अधिकतर नाबालिग और गरीब लड़कियों को ही लाया जाता था।

कथित बाबा, शिष्यों और मुख्य सेविकाओं का सच जिस तरह से पीड़िता ने मजिस्टेट के सामने 164 के तहत जो बयान दिया, उससे पता चलता हैं, कि इन लोगों ने मिलकर किस तरह साध्वी को नोंचा खसोटा और घिनौना हरकत किया। जिस तरह कथित बाबा आषाराम ने पीड़िता के साथ किया था, ठीक उसी तरह कथित बाबा सच्चिदानंद उर्फ दयानंद ने भी किया। इन लोगों ने पीड़िता के साथ ऐसा व्यवहार किया, वैसा कोई जानवर भी नहीं करता। अब जरा सोचिए और अंदाजा लगाइए कि अगर किसी नाबालिग लड़की के साथ एक नहीं दो नहीं बल्कि चार लोग दरिंदगी के साथ बलात्कार करते हैं, वह भी हाथ, पैर बांधकर, तो उस लड़की पर क्या बीती होगी।

अगर कहीं इस तरह की हैवानियत देश के विभिन्न राज्यों में ले जाकर किया गया हो तो कथित बाबा और उनके शिष्यों को आप क्या नाम देंगे, पीड़िता की माने तो ऐसे बाबाओं को सरेआम फांसी पर लटका देना चाहिए, ताकि कोई ढ़ोगी बाबा कभी किसी गरीब लड़की के साथ इस तरह का व्यवहार न कर सके। बयान में ऐसी-ऐसी बाते कही गई हैं, जिसे लिखा नहीं जा सकता। जिस कथित बाबा ने अपने आश्रम का नाम सत्यलोक आश्रम दिया हो उसे नरक आश्रम कहना गलत नहीं होगा। बहरहाल, मामले की गंभीरता को देखते हुए डीएम की रिपोर्ट पर इसकी प्रभावी पैरवी करने के लिए अपर जिला षासकीय अधिवक्ता 'दुर्गादत्त उपाध्याय' को शासन ने नियुक्ति किया हैं। इनका कहना है, कि अगर यह केस षुरुआत में ही मेरे पास आ जाता तो आज कथित बाबा, उनके षिष्यों और मुख्य सेविकाओं की कहानी कुछ और होती। वैसे इन्होंने अपने पहले ही बहस में अपनी उपयोगिता को साबित कर दिया। इनके बारे में कहा जाता है, कि यह अपने क्लाइंट को परिवार का सदस्य मानकर उनका केस लड़ते है। इनके बारे में यह भी कहा जाता है, कि यह अपने क्लाइंट को न्याय दिलाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते है। अभी तक आपने कथित बाबा सहित अन्य दरिंदों के बारे में जाना, मगर, हम आपको उस 'हीरो' के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके चलते साध्वी को न्याय मिलने की उम्मीद जागी है। इनका नाम कल्पनाथ चैधरी है, और यह उस समय सेल्हरा के प्रधान रहे, जब बाबा के चंगुल से साध्वी भागकर इनके पास आई थी, और इन्होंने न सिर्फ साध्वी को संरक्षण दिया, बल्कि न्याय दिलाने का बीड़ा भी उठाया।

जब भी पीड़िता का बलात्कार होता था तो शिष्य लोग बाबा के कमरे में चिलम चढ़ाकर नंगे डांस कर जष्न मनाते थे। बलात्कार करने से पहले साध्वी को नषीला पदार्थ खिला दिया जाता था। यह घृणित किार्य अधिकतर रात्रि एक बजे के बाद आश्रम में होता था। घिनौना करकत करने के बाद साध्वी को यह अवश्य धमकी दी जाती थी, कि अगर किसी से कुछ कहा तो तुम्हें सहित तुम्हारे पूरे परिवार को समाप्त कर दिया जाएगा। ठीक इसी तरह की हरकत और धमकी कथित बाबा आशाराम भी दिया करते थे। कथित बाबा इतना चालाक हैं, कि वह अपना नाम कभी स्वामी दयानंद तो कभी भगतानंद, तो कभी प्रषांत कुमार तो कभी संतकुमार रख लेता था, कथित बाबा अपने पिता का नाम भी बराबर बदलता रहा। इसकी पुष्टि पीड़िता ने बाबा के विभिन्न फोटो को देखकर की। इस मामले में पुलिस पर भी कई सवाल उठे थे। मीडिया का दबाव बना तब जाकर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। पीड़िता के साथ कई बार आप्राकृतिक बलात्कार भी किया गया। कथित बाबा पर छत्तीसगढ़ में बलात्कार, फ्राड और अकूत संपत्ति रखने के आरोप में सजा भी हो चुकी है। मगर, इसने अपने आपको मृत दिखाकर सजा से बच गया। यह मामला विद्वान न्यायधीष फास्टटेक कोर्ट विजय कुमार कटियार की कोर्ट में चल रहा हैं। जो भी बातें लिखी जा रही है, वह पीड़िता की अनुमति और उसके बताने पर लिखी गई।

'घटतौली' का 'विरोध' किया तो मारकर 'लहुलुहान' कर 'दिया'

चौकी और थाने पर दी गई तहरीर, पूर्व विधायक दयाराम चौधरी ने भी किया प्रयास

❖ मगर न तो पुलिस ने एफआईआर ही नहीं लिखा, और न घायल का मेडिकल ही करवाया

बस्ती।....अगर किसी गरीब को इस लिए मारखाना पड़े कि उसने कोटेदार के घटतौली का विरोध किया, तो यह मान लेना चाहिए कि जिले में जंगलराज है, और पीडीएस पूरी तरह पटरी से उतर चुका है। सरकार इसी व्यवस्था को साफ-सुधरी व्यवस्था कह रही है। नया मामला नगर पंचायत गनेशपुर के पश्चिम टोला के कोटेदार शफीक अहमद का सामने आया। कोटेदार और उनके परिवार पर आरोप है, कि इन्होंने सिराज अहमद नामक उपभोक्ता को इस लिए मार कर लहुलूहान कर दिया, क्यों सिराज को कोटेदार पांच किलों अनाज कम दे रहा था।

सिराज का कहना है, कि अगर उसे यह मालूम होता कि घटतौली का विरोध करने पर उसे बुरी कोटेदार और उनका परिवार मारेगा तो विरोध ही नहीं करते। कम से से कम मार तो नहीं खानील पड़ती, और कामधंधा तो प्रभावित नहीं होता। घूम-घूमकर कपड़ा बेचने वाले सिराज को लगे चोट जीवन भर यह याद दिलाएगा कि मोदी और योगी के राज में उसे राषन कम मिलने पर मार खाना पड़ा। हैरानी तो घटना होने के बाद तब हुई, जब गनेशपुर चैकी ने कोई कार्रवाई करने के बजाए घायल को वाल्टरगंज थाने भेज दिया, यहां पर भी घायल को न्याय नहीं मिला, और उसे यहकर जिला अस्पताल भेज दिया कि मेडिकल करा कर आओ तक एफआईआर लिखा जाएगा। घायलावस्था में सिराज जिला अस्पताल पहुंचा, तो डाक्टरों ने कहा कि सिपाही साथ में आएगें तभी मेंडिकल होगा। वाल्टरगंज थाने की पुलिस को अच्छी तरह मालूम था, कि अस्पताल वाले बिना थाने की पुलिस के मेडिकल ही नहीं करेगें, फिर भी भेज दिया। इसके बाद मामला पूर्व विधायक दयाराम चैधरी तक पहुंचा, उन्होंने ने एसओ से एफआईआर लिखने को कहा, एसओ नें कहा कि ठीक है, एफआईआर हो जाएगा, फिर भी एफआईआर दर्ज नहीं हुआ, फिर मामला सीओ तक पहुंचा, वहां से भी कोई न्याय नहीं मिला।

थकहार कर घायल घर बैठ गया। चैकी से लेकर थाने तक गुहार लगाया, लेकिन किसी ने उसकी आवाज नहीं सूनी। सत्ता पक्ष के पूर्व विधायक की बात भी पुलिस ने नहीं सुनी। यह है, योगी और मोदी की व्यवस्था। मीडिया बार-बार यह कहती आ रही है, कि सरकार अगर थानों और तहसीलों को सुधार ले, तो कोई भी सरकार कभी फेल ही नहीं हो सकती। जिस योगी और मोदी के राज में गरीब उपभोक्ताओं का राषन के लिए मार खाना पड़े, उस योगी और मोदी के रहने से क्या फायदा। हार का कारण भी यही बनता है।

'नकली' प्रधान के 'परिवार' को ही मिला 'सौ दिन' का 'रोजगार'

नकली प्रधान में इतना फर्जीवाड़ा किया, जिसके चलते प्रधानी समाप्त होने के कगार पर आ गई, खड़ी फसल पर नकली प्रधान ने कई किसानों के खेतों का करा दिया समतलीकरण

तेजयुग न्यूज

▸▸ 'असली' प्रधान का पति साइकिल पर बाल मिठाई बेच रहा और नकली प्रधान मलाई काट रहा ▸▸ जनार्दन नामक किसान को मालूम ही नहीं कि उनके खेत का हो गया समतलीकरण ▸▸ विकास खंड बनकटी के खड़ौहा के जर्नादन ने शपथ-पत्र के साथ बीडीओ से की शिकायत

बस्ती।...यह कितनी विचित्र की बात है, कि असली प्रधान दुलारमति का पति साइकिल पर घूम-घूमकर बाल मिठाई बेचता है, और नकली प्रधान मलाई खा रहा है। इस नकली के फर्जीवाड़े के चलते आज विकास खंड बनकटी का गांव खड़ौहा की प्रधानी संकट में आ गई, मामला हाईकोर्ट में चल रहा है।

इस नकली ने इतने किसानों के खेतों का समतलीकरण कागजों में करा दिया, कि किसानों को मालूम ही नहीं कि उनके खेत के समतलीकरण के नाम पर लाखों रुपया निकाल लिया गया। जानकर हैरानी होगी, कि खड़ी फसल के खेतों को समतलीकरण करवा दिया। जब इसकी षिकायत बीडीओ से हुई तो एडीओ आइएसबी ने यह रिपोर्ट लगा दिया, कि शिकायत निराधार है। किसान से बया नही नहीं लिया गया, और बयान नगली प्रधान के परिवार वालों का लिया गया, जिसने यह कहा कि उन्होंने समतलीकरण किया और उन्हें इसकी मजदूरी भी मिली। जानकर हैरानी होगी कि नकली प्रधान ने अ पने परिजन को ही सौ दिन का रोजगार दिया। इनमें तो कई ऐसे हैं, जो फावड़ा चलाना तो क्या खाली ढ़ोलची तक नहीं उठा सकते है।

किसान जनार्दन ने एक बार फिर बीडीओ को षपथ-पत्र के साथ शिकायत करते हुए जांच करवाने और प्रधान के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। नकली प्रधान पर यह भी आरोप है, कि इन्होने मनरेगा और ग्राम निधि का जमकर दुरुपयोग किया। यह जानकर फर्जीवाड़ा किया कि जो भी होगा दुलारमति का होगा, हमारा क्या होगा। इस नकली प्रधान के कालेकारनामें का ब्लॉक वालों ने पूरा साथ दिया, बदले में जमकर उत्पीड़न भी किया। किसान जनार्दन चिल्ला रहा कि एडीओआईएसबी ने उनका बयान लिया ही नहीं। वैसे भी इस ब्लॉक से ईमानदारी की उम्मीद करना ही बेमानी होगा। जिस ब्लॉक के बीडीओ, रोजगार सेवकों से यह कहें, कि अगर

...आखिर 'सपाई' किसके लिए 'लड़े', जिसके लिए 'लड़ें' उसी ने धोखा 'दिया'

सपा ने अपने कैडर के कार्यकर्त्ताओं को खो दिया, वह सिर्फ अपने वोट तक ही सीमित रह गए

70 फीसद बूथों पर आयातित बूथ अध्यक्ष और प्रभारी बनाए गए, जबकि बूथ ही पार्टी की जान होती है, और असली चुनाव बूथ पर होता

तेजयुग न्यूज

▸▸ प्रत्याशियों के लिए लाडी-डंडा खाने वाले 60 फीसद से अधिक कार्यकर्त्ता घर से निकलने को ही तैयार नहीं, प्रचार-प्रसार करना और वोट मांगना तो दूर की बात

▸▸ वहीं भाजपा का कैडर व्यक्ति विशेष से तो नाराज हो सकता है, लेकिन दिमाग में प्रदेश की सत्ता और केंद्र में सरकार लाने की जूनून

बस्ती।...यह सही है, कि सपा ने अपने कैडर के कार्यकर्त्ताओं को एक तरह से खो दिया है। वह सिर्फ अपने वोट तक ही सीमित रह गया है। वह न प्रचार-प्रसार करने निकल रहा है, और न वोट ही मांग रहा है। वहीं भाजपा का कैडर भले ही एक व्यक्ति विषेष से नाराज हो सकता है, लेकिन उसके दिलों दिमाग में प्रदेष और केंद्र की सरकार लाने का जूनून है। सपा कार्यकर्त्ता वैचारिक रुप से कमजोर हो चुका है। कारण, काफी दिनों से सत्ता में न रहना, पालिका और नगर पंचायत चुनाव में कार्यकर्त्ताओं को प्राथमिकता न देना माना जा रहा है। आज भी सपा कार्यकर्त्ता प्रत्याषी को अपने दल का नेता मानने को तैयार नहीं है। कारण, जाति विषेष का ठप्पा लगना।

कार्यकर्त्ता इस लिए भी नाराज है, कि 2022 के विधानसभा चुनाव में कार्यकर्त्ताओं ने जीजान लगा दिया, बूथ से लेकर मतगणना समाप्त होने तक अपना सर्वत्र न्यौछावर कर दिया, मुकदमें झेले, पुलिस के प्रताड़ना को सहा, तमाम गरीब कार्यकर्त्ता थानों और पुलिस से प्रताड़ित हुए। जीतने के बाद नेता खुद बचते फिर रहे थे। कार्यकर्त्ताओं की कोई सुध लेना वाला नहीं था, कार्यकर्त्ताओं को गिरफतारी से बचने के लिए गहने तक बेचने पड़े, तीस-तीस हजार रुपया पुलिस को देना पड़ा। न जाने कितने दिन तक पुलिस से बचने के लिए छिपते रहे। परिवार संकट में आ गया था। सपा का कार्यकर्त्ता यह मानकर चल रहा है, कि इस चुनाव में उनका नेता न तो पीएम बनेगें और न केंद्र में सत्ता आएगी। ऐसे में कार्यकर्त्ता क्यों पीड़ित हो क्यों मुकदमें झेले, क्यों पुलिस की लाडी खाए। रही सही कसर पालिका, गायघाट, मुंडेरवा एवं बनकटी के चुनाव में आयातित लोगों को लड़ाने से पूरा हो गया।

कार्यकर्त्ताओं को सबसे तगड़ा झटका पालिका से लगा, कब आयाराम हुए और कब गयाराम, पता ही नहीं चला। कार्यकर्त्ताओं को इसका जबाव आजतक महारथियों ने नहीं दिया। विधानसभा चुनाव में भी आयातित लोगों को ही तरजीह दी गई। कार्यकर्त्ता कहता है, कि आखिर वह लोग किसके लिए लड़े और किसके लिए लाडी खाएं, जिसके लिए लड़े और लाडी खाया उसी ने धोखा दिया। 60 फीसद कार्यकर्त्ता सपा से किनारा कस चुके है। वे अब आयातित लोगों के लिए घर से निकलने को तैयार नहीं हैं। लाडी-डंडा खाना तो बहुत दूर की बात है। अनेक कार्यकर्त्ता यह कहते हुए भी नहीं हिचकतें कि जब उसका विधायक सत्ता पक्ष के एहसान तले दबा है, तो उससे क्या उम्मीद की जा सकती है। माना जाता है, कि पार्टियां सबसे अधिक जोर बूथ एजेंट पर देती है, क्यों कि असली चुनाव तो बूथ पर ही होता है, यह लोग परिणाम को बदलने की हैसियत रखते हैं, देखा जाए तो लगभग 70 फीसद बूथ अध्यक्ष और प्रभारी आयातित है। इससे भी कार्यकर्त्ताओं में अच्छाखासा नाराजगी देखी जा रही है।

सेहत के साथ खिलवाड़ करने वालों पर शिकंजा

तेजयुग न्यूज

लालगंज/रायबरेली : होली के त्यौहार में सेहत के साथ खिलवाड़ व नकली खोया की खपत करने वाले व्यापारियों के खिलाफ खाद्य विभाग ने कड़ा रुख अख्तियार किया है विभाग की टीम ने छापेमारी अभियान के तहत कुंतलों की तदात में नकली खोया बरामद किया है जिसे विभाग ने जमींदोज करा दिया है। बताते चलें कि जिला खाद्य अधिकारी इन्द्र बहादुर यादव व उनकी विभागीय टीम ने एसजेएस स्कूल लालगंज के पास नकली खोए का जखीरा रोडवेज बस से उतरने के समय पकड़ा गया है। जिला खाद्य अधिकारी ने बताया कि कानपुर से रोडवेज बस के द्वारा खोया लालगंज लाया जा रहा था और बासुगढ़ी बृजेंद्र नगर के दिलीप गुप्ता पुत्र सूरज कुमार गुप्ता खोया बस से उतर रहा था तभी मौके पर उसे रंगे हाथों पकड़ा गया है।

▸▸ छापेमारी में खाद्य विभाग ने पकड़ा नकली खोया कराया जमींदोज

जांच करने के लिए खोये के नमूने लिए गए हैं और संपूर्ण ढाई कुंतल खोया पास की ही नहर में मिट्टी में दबा दिया गया है। वही नकली खोया मिलने पर भारतीय जनता पार्टी के विधानसभा संयोजक सुशील शुक्ला ने नाराजगी जताते हुए कहा कि स्थानीय खाद्य अधिकारी डीपी सिंह के द्वारा लापरवाही बरते जाने से लालगंज में नकली खोया भारी मात्रा में फल फूल रहा है । बड़े-बड़े होटलों में नकली खोया खपाया जा रहा है और लालगंज के खाद्य अधिकारी सफारी में बैठकर केवल लालगंज वसूली करने आते हैं। उन्हें कहीं भी नकली खोया दिखाई नहीं पड़ता है, वह तो कहिए कि नागरिकों की जागरूकता के चलते शुक्रवार को नकली खोया पकड़ा गया है।

जिला खाद्य अधिकारी इन्द्र बहादुर यादव ने बताया कि पकड़े गए खोये में किस फर्म के द्वारा खोया बनाया गया है, यह अंकित नहीं था और खोया बनने की डेट भी अंकित नहीं थी। किसी भी प्रकार के कोई अभिलेख भी नहीं पाए गए जिसके कारण खोया मिट्टी में नष्ट कराया गया है। वही दिलीप गुप्ता को निजी मुचलके पर छोड़ा गया है। खोये को प्रयोगशाला जांच के लिए भेजा जाएगा। नमूना फेल होने पर कार्यवाही की जाएगी।

'राशन' के साथ 'हजारों' की 'मजदूरी' भी चली 'गई'

बनकटी क्षेत्र के कोटेदार गरीबों का हक मार रहे, जबरिया अंगुठा लगवा तो लेते हैं, मगर राशन नहीं देते

तेजयुग न्यूज

बनकटी/बस्ती।...गांव में मजदूरों का हक प्रधान मार रहे हैं, और जो कुछ बचता है, उसे कोटेदार डकार ले रहे है। गरीबों को राशन तो नहीं मिलता अलबत्ता रोजी रोटी से हाथ अवश्य धोना पड़ता। मान लीजिए कि अगर किसी को राशन मिल भी गया तो उसे पूरा राषन कभी नहीं मिलता, पांच से आठ किलो राशन कोटेदार अपने हिस्से का रख लेता है।

अगर किसी गांव में तीन से चार सौ कार्डधारक हैं, तो उस गांव का कोटेदार हर माह 50 से 60 हजार की कमाई सिर्फ घटतौली करके कमाता है। इस कमाई का कुछ हिस्सा उसे तहसील और डीएसओ कार्यालय में देना पड़ता है। यह उस योजना का हाल हैं, जिस योजना को इतना मजबूत बताया जा रहा है, कि कोई भी कोटेदार एक भी दाने की चोरी नहीं की सकता। पहले सरकार पासमशीन के जरिए वितरण करने का निर्णय लिया, जब वह फेल हो गया तो इलेक्टिानिक कांटा वाली मषीन से तौलकर देने का फैसला हुआ, सरकार का दावा है, कि अगर कोई कोटेदार 50 ग्राम के राशन की घटतौली करने का प्रयास करेगा तो मशीन से पर्ची ही नहीं निकलेगी, अगुंठा भी नहीं लगेगा, कहने का मतलब इस मशीन से न तो कोई कोटेदार एक दाना अधिक दे सकता है, और न कम। इसका भी कोटेदारों ने तोड़ निकाल लिया। कोटेदार, उपभोक्ता का अगुंठा लगा लेता है, और सही वनज का राशन अपने पास रख लेता है, और कहता है, कि कल आना राशन मिल जाएगा।

ध्यान रहे कोटेदार उपभोक्ता को पासमशीन से निकलने वाली पर्ची नहीं देता। अब उसके बाद कोटेदार, उपभोक्ताओं को राषन के लिए दौड़ाता रहता है। इसी चक्कर में कई मजदूरों की दिहाड़ी भी चली जाती है। कई ऐसे उपभोक्ता भी होते हैं, जो राषन के चक्कर दौड़-दौड़कर परेषान हो जाते हैं, जब अधिक परेषान हो जाते हैं, तो वह जाना ही छोड़ देते है। इसी तरह अगर कोई उपभोक्ता अधिक जागरुक निकला तो उसे राशन तो कोटेदार दे देता है, लेकिन उसमें से यहकर पांच से आठ किलो रख लेता है, कि जो फ्री में मिल रहा है, ले जाओ, जब पैसा देना तो पूरा राशन ले जाना। कई स्थानों पर तो मारपीट तक की नौबत आ चुकी है, धरना प्रदर्शन तक करने लगे। यह खेल सिर्फ बनकटी क्षेत्र में नहीं खेला जा रहा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांष कोटेदार यह खेल खेल रहे हैं, विभाग और तहसील वाले इस लिए नहीं बोलते क्यों कि बखरा उन्हें भी मिल जाता है।

कोटेदार, सरकार के उस कहावत को चरित्रार्थ कर रहे हैं, जिसमें यह कहा जाता है, कि सरकार डाल-डाल तो कोटेदार पात-पात। जिस तरह प्रधानों के खून में मजदूरों का हक मारना षामिल हो गया, ठीक उसी तरह कोटेदारों के खून में भी गरीबों का हक खाना मिल चुका है। ऐसा ही एक मामला चित्राखोर गांव का सामने आया। ग्रामीण उस समय उग्र हो गए जब अंगूठा लगवा कर कोटेदार द्वारा राशन नहीं दिया जा रहा था। चंद्रावती, फूलमत, बासमती, राम उजागिर, लालचंद, दुर्गावती पत्नी बीरबल, अनीता पत्नी मुन्नालाल, प्रभावती पत्नी हरिश्चंद्र, अर्चना पत्नी गणपत, आशा पत्नी चंद्रभान, चंपा पत्नी दुर्गा प्रसाद, बिंद्रावती पत्नी राजाराम, मनभवता पत्नी मोहन, सिस्था देवी पत्नी धर्मराज, चंद्रावती पत्नी रामकरन, गुड़िया पत्नी राम सजीवन, कमलापति पत्नी पूर्णमासी, अनीता पत्नी मुन्नालाल प्रभावती पत्नी हरिश्चंद्र आदि ने बताया कि अंगूठा लगवाने के बाद पहले की ही भांति शोषण करने की नीति अपना रहे हैं। बता दें, अब ऑनलाइन व्यवस्था के तहत यदि कांटा पर राशन कम है तो उपभोक्ताओं का अंगूठा नहीं लग रहा है।

जैसे अंत्योदय कार्ड धारक को 35 किलो राशन मिलना चाहिए तो उसमें 20 किलो चावल एवं 15 किलो गेहूं है। यदि उपभोक्ता पहले 20 किलो चावल तौल करवाया तो पर्ची निकलेगी की इतने कीमत का चावल आपको मिल रहा है। फिर कोटेदार द्वारा कांटा जीरो करेगा। पुनः 15 किलो गेहूं तौला जाएगा फिर पर्ची गेहूं के रेट की मिलेगी लेकिन कोटेदारों द्वारा उपभोक्ताओं को पर्ची नहीं दी जा रही है। कहीं-कहीं अंगूठा लगवाने के बाद दो-तीन दिन बाद बुलाया जा रहा है। तो कहीं खाद्यान्न कम देने की बात सामने आ रही है। किसी भी दुकान पर कोई बोर्ड लगा नहीं दिखाई मिल रहा है। जिस पर खाद्यान्न का रेट और मात्रा, कोटेदार का नाम शिकायत करने वाले अधिकारी का भी नाम अंकित रहता है। ऐसी शिकायत हर कोटेदारों की दुकानों से मिल रही हैं।

हर जगह के उपभोक्ता परेशान नजर आ रहे हैं। शंकरपुर गांव निवासी रामबेलास, अन्तोदय कार्ड धारक ने बताया कि इस राशन के पीछे मजदूरी भी करने नहीं जा पा रहे हैं। दिन भर इन्तजार करने के बाद लोगों द्वारा अंगूठा लगवाया जा रहा है। अंगूठा लगवाने के बाद दो-तीन दिन बाद फिर बुलाया जाता है। वह भी निश्चित नहीं रहता की उस दिन मिल ही जाएगा। मजदूरी से अनुपस्थित रहने पर मालिक दूसरा मजदूर रख ले रहे हैं। धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

कोटेदार सहित अन्य तीन पर मुकदमा दर्ज

नसीराबाद/रायबरेली : थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत तारापुर कोटेदार समेत तीन अन्य पर एससी एसटी सहित गम्भीर धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। मिली जानकारी के अनुसार तारापुर निवासी अजय कुमार पुत्र दयाराम ने दर्ज मुकदमे में आरोप लगाया है कि बीती रात करीब 8:00 बजे राशन कम मिलने को लेकर गांव के वर्तमान कोटेदार धर्मराज पुत्र जगन्नाथ,बिकास पुत्र धर्मराज फूलकली पत्नी धर्मराज पूजा पुत्री धर्मराज जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए लाठी डंडों से लैस होकर खूब मारा पीटा गया मार पीट में पीड़ित का भाई संजय और भाभी अमरावती को भी चोटें आई हैं पीड़ित का कहना है कि क्षेत्र के कोटेदारो की दादागिरी चल रही है हर माह राशन कम देते हैं बोलने पर मारपीट करते हैं पीड़ित ने बताया कि राशन तौलने वाले काटे पर टीन शट रख कर तौल रहे थे जिसका बिरोध किया गया तो कोटेदार ने भद्दी भद्दी गालियां देते हुए भगा दिया और फिर रात करीब 8 बजे कोटेदार और इनका परिवार मार पीट करने लगा मामले में कोटेदार का पक्ष रखने के लिए सम्पर्क किया गया तो फोन नहीं उठा जिसके बाद मामले की सच्चाई जानने के लिए गांव वासी एवं क्षेत्रीय लोगों से जानकारी की गई तो बताया कि मामला झूठा है रंजिशन आरोप लगाते हुए मुकदमा लिखाया गया मामले में नसीराबाद थाना अध्यक्ष राजेश कुमार मौर्य से बात करने पर बताया कि तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच किया जा रहा है जो भी सही होंगा उस पर कार्रवाई की जाएगी

राशन कम देने के विरोध में कोटेदार पर मारपीट का आरोप